

कल्पतरु पुण्यात्मा प्रेम सुधा शवि नाम
कल्पतरु पुण्यात्मा प्रेम सुधा शवि नाम
हतिकारक संजीवनी शवि चतिन अवरिम
पतति पावन जैसे मधु शवि रस नाके घोल
भक्तिके हंसा ही चुगे मॉती यह अनमोल
जैसे तनकि सुहागा सोने को चमकाए
शवि सुमरिसे आत्मा अदबुदथ नखिरी जाये
जैसे चन्दन वृष को दंसते नहीं है नाग
शवि भक्तो के चोले को कभी लगे ना दाग
ॐ नम शविय (2)

दया नधि भूतेश्वर शवि है चतुर सुजन
कण कण भीतर है बसे नीलकंठ भगवान्
चंद्रचूड के नेत्र उमापति विशिवेश
शरणागत के यह सदा पके सकल अनेक
शवि द्वारे प्रपंच का छल नहीं सकता खेल
आग और पानी का जैसे होता नहीं है मेल
भयाभंजना नटराज है डमरू वाले नाथ
शवि का वंदन जो करे शवि है उनके साथ
ॐ नम शविय (2)

लाखो अश्वादमेध हो सो गंगा अस्नान
इनसे उत्तम है कही शवि चरणों का ध्यान
अलख नरिजन नाथसे उपजे आत्मा ग्यान
भटके को रास्ता मल्लि मुशकाँ हो आसान
अमर गुणों की खान है चति शुधिशवि ध्यान
सत संगती में बैठके करलो प्रसूच्याताप
लगिश्वर के मननसे सदिध हो जाते काज
नमो शविय रटता जा शवि रखेंगे लाज
ॐ नम शविय (2)

शवि चरणों को चुन्नेसे तनमन पावन होई
शवि के रूप अनुपकी समता करे ना कोई
महाबली महादेव है महा प्रभु महा काल
असुर नकिंदन भक्त की पीड़ा हरे तत्काल
सर्वयापी शवि भोला धर्म रूप सुख काल
अमरनानता भगवंता जगके पालन हार
शवि करता संसार के शवि शरूषटके मूल
रोम रोम शवि रमने दो शवि ना जैय्यो भूल
ॐ नम शविय (2)